ADVERTORIAL

गुरु पूर्णिमा

सहज योग

सहज योग
50 Years
स्वर्णजयंती
(१९७०–२०२०)

परम पूज्य श्री माताजी निर्मला देवी
सहज योग संस्थापिका
कुण्डलिनी जागरण द्वारा आत्म–साक्षात्कार दात्री

सहज योग अंतर्राष्ट्रीय
विश्व निर्मल धर्म

एक सद्गुरु के गुण

गुरु आपको परमात्मा से मिलवाता है

सच्चे गुरु की सबसे बड़ी पहचान यह है कि वह आपको परमात्मा से मिलवाता है, अर्थात् वह आपकी कुंडलिनी को जागृत करके आपका संबंध परमात्मा की सर्वव्यापी शक्ति से स्थ–ापित करवाता है। एक बार गुरु नानकजी से पूछा गया कि सच्चा गुरु कौन है? तो उन्होंने कहा, ''साहब मिलिहें सो ही सदुरु''। अर्थात् जो आपको परमेश्वर से मिलाये वही सच्चा है। फिर उन्होंने इन गुरुओं को अगुरु और कुगुरु इत्यादि श्रेणियों में भी बाँटा है। सच्चा गुरु वही है जो आपको परमेश्वर से, दैवीय शक्ति से मिलाता है।

आप गुरु को खरीद नहीं सकते

एक सच्चे गुरु को एक माता की तरह अपने शिष्यों के कल्याण और धर्म–परायणता की पूरी ज़िम्मेदारी लेनी चाहिये। गुरु ही अपने शिष्य को ब्रह्मचैतन्य से जोड़ता है। आप उस को खरीद नहीं सकते। यदि आप किसी गुरु को खरीदते हैं तो वह आपका दास हो सकता है, लेकिन गुरु कभी नहीं हो सकता।

एक गुरु को एक उच्च कोटि का साक्षात्कारी और अत्यधिक विकसित होना चाहिये

गुरु को एक सच्चा गुरु होना चाहिये, न कि अपने शिष्यों का शोषण करनेवाला, परमात्मा से अनाधिकृत कोई व्यक्ति। मानवीय चेतना और परमेश्वरी चेतना के बीच बहुत बड़ा अंतर होता है, जिसे केवल एक पूर्ण गुरु ही भर सकता है। आज पूर्णिमा का दिन है, और पूर्णिमा का अर्थ है पूर्ण चंद्रमा। गुरु को एक संपूर्ण व्यक्तित्व होना चाहिये, जो अपने शिष्यों को परमेश्वरी विधानों के बारे में बता सके और उनकी समझ को उस स्तर तक ऊँचा उठा सके, कि वे उन विधानों को अपने अंदर समा सकें। वह इस अंतर को भरने के लिए है, और इसके लिये यह आवश्यक है कि प्रत्येक गुरु एक उच्च कोटि का आत्म–साक्षात्कारी और विकसित व्यक्ति हो।

यह आवश्यक नहीं कि गुरु एक सन्यासी हो

यदि आप सभी गुरुओं के जीवन को देखेंगे तो पायेंगे कि वे सभी विवाहित थे, उनके बच्चे थे और वे सामान्य लोगों की तरह जीवन व्यतीत करते थे। फिर भी अपने व्यक्तिगत जीवन में वे एकदम निर्लिप्त थे। यह आवश्यक नहीं कि गुरु एक सन्यासी हो, न ही यह कि वह जंगलों में रहे। वह एक सामान्य गृहस्थ हो सकता है और एक राजा भी हो सकता है। जीवन की यह सभी बाहरी अभिव्यक्तियाँ कोई मायने नहीं रखतीं।

(परम पूज्य श्री माताजी निर्मला देवी द्वारा प्रदत्त मार्गदर्शन)

सभी गुरुओं और पैगंबरों ने आपसी प्रेम और शांति का ही संदेश दिया

''जब आप दैवी शक्ति के आयाम, यानि ब्रह्म में रहते हैं, तो वह आपकी देखभाल करती है।''
–राजा जनक

''मैं आपसे विनती करता हूँ कि मेरे और आपके, तथा मेरे और आपके लोगों के बीच किसी भी तरह का संघर्ष या मनमुटाव नहीं होना चाहिये, क्यों कि हम सब तो भाई–भाई हैं।'' **– अब्राहम**

''दूसरों पर विजय प्राप्त करना बल है, लेकिन स्वयंपर विजय प्राप्त करना सच्ची शक्ति है।''
–लाओत्से

''सत्य का मार्ग ही एकमेव मार्ग है।''
–जराथुष्ट्र

''हर इंसान में भगवान को देखो।''
– शिरडी के साँईनाथ

''आज मैं आपको जो भी धर्मोपदेश दे रहा हूँ, आपको उनका अनुसरण करना पड़ेगा, ताकि आप शक्तिशाली बनें।''
–मोज़ेस

''जिस जीवन का निरीक्षण न किया गया हो, वह जीने लायक नहीं।''
– सुक्रात

''हमारी सबसे बड़ी प्रतिष्ठा कभी न गिरने में नहीं है, बल्कि गिरने पर हर बार उठ जाने में है।''
–कन्फूशियस

''खुदा की रचना पर एक घंटे ध्यान करना, सत्तर वर्ष प्रार्थना करने से बेहतर है।''
–पैगम्बर मोहम्मद

''समस्त मानवता के बीच भाईचारा ही योगियों का सच्चा नियम है। अपने मन को जीतना ही सारे विश्व को जीतना है।''
– गुरु नानक

गुरु वही जो हमें प्रभु से मिलाये

सद्गुरु को परखने की ७ कसौटियाँ

सत्य–साधक परमात्मा को पाने के लिए और जीवन के संघर्षों से पार पाने के लिये सदैव सच्चे गुरु की खोज में रहते हैं, लेकिन कई बार इस प्रयास में वे झूठे गुरुओं के चंगुल में फंस जाते हैं। आजकल भारत में ऐसे झूठे गुरु खूब फल–फूल रहे हैं जो आपकी आस्था, रूपये–पैसे, स्वास्थ्य और विवेक, सब चौपट करने के लिए तैयार बैठे हैं। नीचे दी गईं ७ कसौटियों पर परख के आप स्वयं सत्य जान सकते हैं।

१) क्या कभी रूपया पैसा लिया जाता है? यदि रूपया–पैसा लिया जा रहा है तो अवश्य गोरख–धंधा है। सत्य न तो खरीदा जा सकता है और न ही बेचा जा सकता है।

२) यदि किसी गुरु के शिष्य आपका एक सेल्समैन की तरह पीछा करते हैं और आपको शिष्य बनाने के पैसे लेते हैं तो समझ जाइये कि यह एक संगठित व्यापार है, सत्य–साधना का मार्ग नहीं।

३) उस गुरु के साथ आपको क्या अनुभव मिला? हर क्षणिक अनुभव दैवीय नहीं होता। कुछ दिखना या सुनाई देना, हवा में तैरना, भविष्यवाणियाँ, प्रभामंडल, मृतकों के साथ बातचीत इत्यादि करतब अत्यंत खतरनाक होते हैं।

४) यदि वह गुरु आध्यात्मिक मार्ग पर चलने हेतु आपको अपने परिवार और संपत्ति को त्यागने का निर्देश देता है, तो निश्चित रूपसे यह एक छलावा है। अतः ऐसे गुरु से सावधान हो जाइये।

५) क्या आपको अजीब से कपड़े पहनने के लिए, अजीब मुद्राओं में बैठने के लिए, सुबह–शाम मंत्र जाप के लिए, या कोई अँगूठी या आभूषणादि पहनने को कहा जाता है? आपको जान लेना चाहिये कि परमात्मा इन सब व्यर्थ की चीज़ों से परे हैं और उनके लिये, आपकी उनको प्राप्त करने की शुद्ध इच्छा ही महत्व रखती है।

६) आपके क्या प्राप्त होता है? क्या आपके गुरु आपको सदाचारी बना पाते हैं? यदि वह एक धर्म को दूसरे से श्रेष्ठ बताते हैं तो इसका अर्थ है कि वे धर्म के नाम पर केवल पाखंड कर रहे हैं।

७) यदि आपके गुरु आपको व्यभिचार, यौन स्वतंत्रता या कठोर सन्यास की ओर उन्मुख कर रहे हैं, तो फिर निश्चित रूप से आप गलत स्थान पर आ गये हैं, जहाँ पर ये झूठे गुरु और उनके एजेन्ट आपका शोषण करने के लिए तैयार हैं।

सत्य को प्राप्त करने के लिये आपको अनेकों शुभकामनायें।

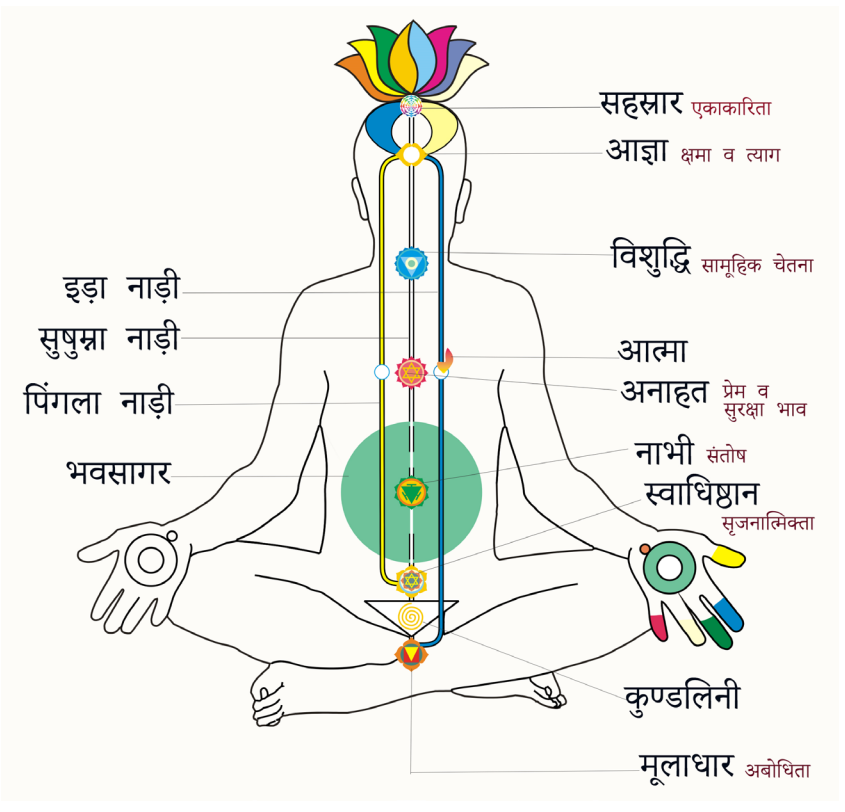

सहज योग विश्व को एक सूत्र में पिरोता है

अधिक जानकारी और अपना आत्म–साक्षात्कार पाने के लिए, निम्न सूत्रों का उपयोग करें–

www.sahajayoga.org
www.nirmaldham.org
www.sahajayogamumbai.org
www.sahajayoga.org.in
www.freemeditation.com
www.freemeditation.com.au
www.sahajayogaworld.org

विश्व भर के सहज योग संपर्क–सूत्रों के लिए

This is brought to you by **M B Ratnannavar** and **Team of Sahaja Yogis.** E-mail: mbratan@gmail.com